

अमरूद की खेती में बहार प्रबंधन का महत्व एवं उन्नत तकनीकें

केएम रुमा, दुष्यन्त, आदर्श कुमार मीणा एवं शिखा कुमारी
सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, मेरठ

अमरूद का परिचय एवं महत्व

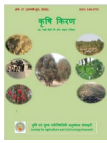
अमरूद एक भारत में एक प्रमुख वाणिज्यिक रूप से उगाई जाने वाली फल फसल है, जो उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में विशेष रूप से पाया जाता है। यह अपने स्वादिष्ट स्वाद और उच्च पोषण मूल्य के लिए प्रसिद्ध है। अमरूद एंटीऑक्सीडेंट, घुलनशील शर्करा, प्रोटीन, आहार रेशा (डाइटरी फाइबर), राइबोफ्लेविन तथा आवश्यक अमीनो अम्लों का अच्छा स्रोत है। इसमें विटामिन बी की मात्रा सामान्य संतरे की तुलना में लगभग चार गुना अधिक होती है। इसके अतिरिक्त, अमरूद में विभिन्न जैव-सक्रिय यौगिक जैसे फ्लेवोनोइड्स, टैनिन्स, कैरोटेनॉइड्स, पॉलीफेनॉल्स तथा पेंटासाइक्लिक ट्राइटरपेनॉइड्स भी पाए जाते हैं, जो इसके औषधीय गुणों को और अधिक बढ़ाते हैं। कृषि की दृष्टि से भी अमरूद एक महत्वपूर्ण फल फसल है, क्योंकि यह विभिन्न प्रकार की जलवायु एवं मिट्टी की परिस्थितियों में आसानी से उगाया जा सकता है। इसकी खेती कम लागत में अधिक उत्पादन देने वाली होती है, जिससे यह किसानों के लिए लाभकारी विकल्प बनती है। भारत में अमरूद को “गरीबों का सेब” भी कहा जाता है, क्योंकि यह सस्ता होने के साथ-साथ अत्यधिक पौष्टिक होता है।

इसकी उच्च उत्पादन क्षमता, पोषण गुणों और औषधीय महत्व के कारण अमरूद की मांग देश-विदेश में लगातार बढ़ रही है, जो इसे एक महत्वपूर्ण वाणिज्यिक फसल बनाती है। अमरूद न केवल पोषण की दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि यह स्वास्थ्य लाभों के कारण भी अत्यंत उपयोगी फल माना जाता है।



अमरूद में बहार प्रबंधन की प्रमुख विधियाँ

अमरूद में बहार प्रबंधन एक अत्यंत महत्वपूर्ण तकनीक है, जिससे किसान साल भर बेहतर गुणवत्तायुक्त फल और अधिक उत्पादन प्राप्त कर सकते हैं। सामान्यतः अमरूद एक ऐसी फल फसल है जो उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में साल भर विभिन्न समयों पर फूल और फल देती रहती है। यदि इसे बिना प्रबंधन के छोड़ दिया जाए तो यह



बहुत कम फल देता है, जिनकी गुणवत्ता और उत्पादन दोनों ही कमजोर होती है। इसलिए बहार प्रबंधन के माध्यम से फूल और फल लगने के समय को नियंत्रित करना आवश्यक हो जाता है, ताकि किसान को अधिक लाभ और उच्च गुणवत्ता वाली फसल प्राप्त हो सके। अमरूद में मुख्यतः तीन प्रकार की बहार पाई जाती हैं, अम्बे बहार (फरवरी-मार्च में फूल और जुलाई-अगस्त में फल), मृग बहार (जून-जुलाई में फूल और नवंबर-दिसंबर में फल) तथा हस्त बहार (अक्टूबर-नवंबर में फूल और मार्च-अप्रैल में फल)। इन तीनों में से मृग बहार की फसल सबसे उत्तम गुणवत्ता की मानी जाती है, क्योंकि इसके फल स्वाद में बेहतर, मीठे, अधिक पौष्टिक और कीट-रोगों का प्रकोप कम होता है, जिससे बाजार में इनकी कीमत अधिक मिलती है। इसके विपरीत, वर्षा ऋतु की फसल (अम्बे बहार) में फल अधिक मात्रा में तो आते हैं, लेकिन उनकी गुणवत्ता कम होती है, स्वाद फीका होता है और फल मक्खी जैसे कीटों का प्रकोप अधिक रहता है, जिससे किसानों को आर्थिक नुकसान होता है।

फसल नियमन का सिद्धांत एवं आवश्यकता

इसी समस्या को ध्यान में रखते हुए फसल नियमन की तकनीक अपनाई जाती है। इसका मुख्य उद्देश्य पौधे को कुछ समय के लिए विश्राम देना और उसकी प्राकृतिक फूल-फल देने की प्रवृत्ति को नियंत्रित करना है, ताकि एक निश्चित समय पर अधिक और अच्छी गुणवत्ता के फल ले सकें। यह तकनीक

न केवल उत्पादन और गुणवत्ता को बढ़ाती है, बल्कि कीटनाशकों के उपयोग को भी कम करती है, जिससे खेती अधिक टिकाऊ और पर्यावरण के अनुकूल बनती है। अतः अमरूद में फसल नियमन के लिए विभिन्न तकनीकों का उपयोग किया जा सकता है, जिनका विवरण निम्नलिखित है।

टहनियों की छंटाई

अमरूद में पुष्पन वर्तमान मौसम की नई वानस्पतिक शाखाओं पर होता है। अतः शाखा छंटाई के माध्यम से नई वानस्पतिक वृद्धि को प्रेरित कर पुष्पन को इच्छित मौसम की ओर प्रभावी रूप से स्थानांतरित किया जा सकता है। मृग बहार हेतु शाखा छंटाई का समय- उत्तरी भारत की परिस्थितियों में जून-जुलाई में मृग बहार पुष्पन प्राप्त करने के लिए शाखा छंटाई अप्रैल से मई के प्रारम्भ तक करनी चाहिए। अप्रैल के अंतिम सप्ताह से मई के प्रथम पखवाड़े तक का समय सर्वाधिक उपयुक्त माना जाता है। इस अवधि में की गई छंटाई से लगभग 20-30 दिनों के भीतर नई शाखाओं का विकास होता है, जिन पर वर्षा ऋतु के दौरान पुष्पन होता है और फल नवंबर से जनवरी के मध्य तुड़ाई के लिए तैयार हो जाते हैं।

छंटाई की तीव्रता- छंटाई की मात्रा का प्रभाव वानस्पतिक वृद्धि, पुष्पन व्यवहार तथा उपज पर पड़ता है। मृग बहार फसल नियमन के लिए मध्यम स्तर की छंटाई सर्वाधिक प्रभावी पाई गई है।

छंटाई की तीव्रता	हटाए जाने वाले भाग की लंबाई	वृक्ष पर प्रभाव
हल्की छंटाई	शीर्ष भाग के 10-15 सेमी	नई शाखाओं का सीमित विकास
मध्यम छंटाई	शीर्ष भाग के 20-30 सेमी	उत्तम वानस्पतिक वृद्धि एवं पुष्पन
तीव्र छंटाई	30 सेमी से अधिक	अत्यधिक वानस्पतिक वृद्धि एवं फलन में कमी

उत्तरी भारत की परिस्थितियों में वर्तमान मौसम की शाखाओं के शीर्ष भाग से 20-30 सेमी तक की छंटाई सामान्यतः अनुशंसित की जाती है।

शाखा छंटाई की विधि

वृक्ष की संपूर्ण छत्राकार संरचना में स्वस्थ एवं वर्तमान मौसम की शाखाओं का चयन किया जाता है। इसके पश्चात सूखी, रोगग्रस्त, कमजोर, आपस में एक-दूसरे को काटती हुई तथा वृक्ष के अंदर की ओर बढ़ने वाली शाखाओं को हटा दिया जाता है। स्टरलाइज्ड (रोगाणुरहित) सिकेटियर की सहायता से चयनित शाखाओं के शीर्ष भाग से लगभग 20-30 सेमी तक की वृद्धि को बाहर की ओर स्थित कली के ठीक ऊपर से काटा जाता है। छंटाई करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि वृक्ष की छत्राकार संरचना खुली रहे, जिससे प्रकाश का पर्याप्त प्रवेश तथा वायु का समुचित संचार बना रहे। छंटाई के उपरांत काटी गई सभी शाखाओं एवं अवशेषों को एकत्र

कर नष्ट कर देना चाहिए, जिससे कीटों एवं रोगजनकों के संक्रमण के प्रसार की संभावना को कम किया जा सके।



शूट बेंडिंग तकनीक का उपयोग

शाखा झुकाना अमरूद में फसल नियमन के लिए अपनाई जाने वाली एक महत्वपूर्ण छत्र प्रबंधन तकनीक है, जिसका उद्देश्य वांछित बहार, विशेषकर मृग बहार, में पुष्पन को प्रोत्साहित करना है। चूँकि अमरूद में पुष्पन वर्तमान मौसम की नई शाखाओं पर होता है, इसलिए शाखाओं की दिशा को सीधी (ऊर्ध्वाधर) अवस्था से लगभग क्षैतिज अवस्था में परिवर्तित करने से उत्पादक पार्श्व शाखाओं का विकास बढ़ता है, जिससे पुष्पन एवं फलन में वृद्धि होती है।

शाखा झुकाने का समय - उत्तरी भारत की परिस्थितियों में मृग बहार प्राप्त करने हेतु शाखा झुकाने का कार्य अप्रैल-जुलाई के दौरान, नई वानस्पतिक वृद्धि के निकलने से पूर्व किया जाना चाहिए। इस तकनीक से प्रेरित नई शाखाओं पर जून-जुलाई में पुष्पन होता है, जिसके फलस्वरूप नवंबर-जनवरी के दौरान



शीतकालीन फलों की तुड़ाई की जा सकती है। हालांकि, स्थानीय जलवायु, किस्म तथा वृक्ष की वृद्धि क्षमता के अनुसार इस कार्य का समय परिवर्तित हो सकता है।

वृक्षों एवं शाखाओं का चयन

शाखा झुकाने के लिए स्वस्थ, सुदृढ़ एवं नियमित फल देने वाले वृक्षों का चयन करना चाहिए। चयनित शाखाएँ 6-12 माह पुरानी, मध्यम मोटाई वाली, लचीली तथा वृक्ष की छत्र में समान रूप से वितरित होनी चाहिए। रोगग्रस्त, कमजोर, टूटी हुई, छायादार अथवा अत्यधिक तीव्र वृद्धि वाली जलांकुर शाखाओं का चयन नहीं करना चाहिए।

शाखा झुकाने की विधि

चरण 1: उपयुक्त शाखाओं की पहचान - वृक्ष की छत्र में स्थित स्वस्थ, सीधी एवं मध्यम मोटाई वाली शाखाओं का चयन किया जाता है, जो बिना छाल फटे या शाखा टूटे आसानी से झुकाई जा सकें।

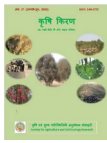
चरण 2: शाखाओं को झुकाना - चयनित शाखाओं को सावधानीपूर्वक नीचे की ओर झुकाकर ऊर्ध्वाधर स्थिति से लगभग 45-60° के कोण पर अथवा लगभग क्षैतिज स्थिति में लाया जाता है। शाखाओं को धीरे-धीरे झुकाना चाहिए, ताकि छाल तथा संवहन ऊतकों को कोई क्षति न पहुँचे।

चरण 3: झुकाई गई शाखाओं को बाँधना - झुकाई गई शाखाओं को जूट की रस्सी, नायलॉन डोरी अथवा प्लास्टिक स्ट्रिप्स जैसी मुलायम सामग्री की सहायता से बाँधा जाता

है। इन डोरियों को वृक्ष की निचली शाखाओं, मुख्य तने, बाँस के सहारों अथवा भूमि में गाड़े गए खूंटों से बाँधकर शाखाओं को इच्छित कोण पर स्थिर रखा जाता है। डोरी को अत्यधिक कसकर नहीं बाँधना चाहिए, जिससे शाखा में वलयबन्धन की समस्या उत्पन्न न हो।

चरण 4: निरीक्षण एवं रख-रखाव - झुकाई गई शाखाओं का समय-समय पर निरीक्षण करना चाहिए तथा क्षतिग्रस्त या ढीली हो चुकी डोरियों को बदल देना चाहिए। यदि छाल को कोई क्षति या दबाव दिखाई दे तो उसे तुरंत ठीक किया जाना चाहिए। नई वानस्पतिक शाखाओं के निकलने तक झुकाई गई शाखाओं को उसी स्थिति में बनाए रखना आवश्यक होता है।

शाखा झुकाने के शारीरिक प्रभाव - शाखा झुकाने से अमरूद में कई शारीरिक एवं जैव-रासायनिक परिवर्तन होते हैं, जो जनन वृद्धि को प्रोत्साहित करते हैं तथा प्रभावी फसल नियमन में सहायक होते हैं। शाखाओं को झुकाने से शीर्ष प्रभुत्व कम हो जाता है, जिससे पार्श्व कलियों पर ऑक्सिन का अवरोधक प्रभाव घटता है और पार्श्व कलियों का प्रस्फुटन बढ़ता है। परिणामस्वरूप, वर्तमान मौसम की अधिक संख्या में उत्पादक शाखाएँ विकसित होती हैं, जिन पर पुष्पन एवं फलन होता है। इसके अतिरिक्त, शाखा झुकाने से वृक्ष की छत्र संरचना खुली हो जाती है, जिससे प्रकाश प्रवेश एवं वायु संचार में सुधार होता है।



और प्रकाश संश्लेषण की क्षमता बढ़ती है। यह तकनीक स्रोतदृभंडार संबंध को भी बेहतर बनाती है, जिससे पोषक तत्वों एवं प्रकाश संश्लेषित पदार्थों का उपयोग वानस्पतिक वृद्धि के बजाय पुष्पन एवं फल विकास में अधिक होता है। इन समग्र प्रभावों के कारण वांछित बहार में समन्वित पुष्पन, बेहतर फल सेट, उत्पादक शाखाओं की संख्या में वृद्धि तथा उच्च उत्पादकता प्राप्त होती है।

जड़ छंटाई एवं सिंचाई रोकने की तकनीक

जड़ छंटाई तथा सिंचाई रोकना अमरूद में फसल नियमन की पारंपरिक तकनीकें हैं, जिनका उपयोग अवांछित बहार को नियंत्रित कर वांछित बहार, विशेषकर मृग बहार, में पुष्पन प्राप्त करने के लिए किया जाता है। इन तकनीकों का आधार वृक्ष पर नियंत्रित तनाव उत्पन्न करना है, जिससे पुष्पन व्यवहार में परिवर्तन होता है तथा फलों की गुणवत्ता में सुधार होता है।

अ. जड़ छंटाई-इस तकनीक में वृक्ष के आसपास की अवशेषक जड़ों को आंशिक रूप से काटकर जल एवं पोषक तत्वों के अवशेषण को अस्थायी रूप से कम किया जाता है, जिससे वानस्पतिक वृद्धि घटती है और वृक्ष में विश्राम अवस्था उत्पन्न होती है।

विधि

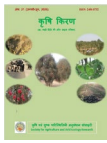
- ❖ उत्तरी भारत में मृग बहार हेतु यह कार्य सामान्यतः अप्रैल-मई में किया जाता है।

- ❖ वृक्ष के तने से 40-60 सेमी दूरी पर 20-30 सेमी गहरी एवं 20-30 सेमी चौड़ी गोलाकार खाई खोदी जाती है।
- ❖ खाई में दिखाई देने वाली अवशेषक जड़ों को तेज फावड़े या सिकेटियर से काटा जाता है, जबकि मुख्य जड़ों को क्षति नहीं पहुँचाई जाती।
- ❖ कटी हुई जड़ों को 2-3 सप्ताह तक खुला छोड़ दिया जाता है, जिससे हल्का तनाव उत्पन्न हो सके।
- ❖ इसके बाद खाई को मिट्टी एवं अच्छी सड़ी हुई गोबर की खाद से भर दिया जाता है।
- ❖ पुनः सिंचाई एवं अनुशंसित उर्वरकों का प्रयोग किया जाता है, जिससे नई शाखाओं का विकास एवं एकरूप पुष्पन होता है।

शारीरिक प्रभाव

- ❖ जल एवं पोषक तत्वों का अवशेषण कम होता है।
- ❖ अत्यधिक वानस्पतिक वृद्धि नियंत्रित होती है।
- ❖ वृक्ष में अस्थायी विश्राम अवस्था उत्पन्न होती है।
- ❖ तनाव समाप्त होने पर जनन वृद्धि को बढ़ावा मिलता है तथा समकालिक पुष्पन होता है।

ब. सिंचाई रोकना-यह अमरूद में फसल नियमन की सबसे प्रचलित विधियों में से एक है। इसमें नियंत्रित जल तनाव उत्पन्न करके अवांछित पुष्पन एवं फलन को कम किया



जाता है तथा वांछित बहार में पुष्पन को प्रोत्साहित किया जाता है।

विधि

- ❖ मृग बहार प्राप्त करने हेतु अप्रैल/मई में सिंचाई बंद कर दी जाती है।
- ❖ यह तनाव तब तक बनाए रखा जाता है जब तक आंशिक मुरझान एवं पत्ती झड़ना प्रारम्भ न हो जाए।
- ❖ तनाव की अवधि के दौरान नमी संरक्षण करने वाली क्रियाओं से बचना चाहिए।
- ❖ वांछित स्तर का तनाव उत्पन्न होने के बाद पुनः सिंचाई प्रारम्भ की जाती है।
- ❖ सिंचाई के साथ अनुशंसित मात्रा में खाद एवं उर्वरकों का प्रयोग किया जाता है।
- ❖ पर्याप्त नमी उपलब्ध होने पर नई शाखाओं का विकास होता है तथा जून/जुलाई में पुष्पन प्रारम्भ होता है।
- ❖ शारीरिक प्रभाव
- ❖ पौधों में जल की उपलब्धता घटने से अस्थायी रूप से वृद्धि रुक जाती है।
- ❖ अवांछित फूल एवं छोटे फल झड़ जाते हैं।
- ❖ कार्बोहाइड्रेट का संचयन एवं पुनर्वितरण बढ़ता है।
- ❖ पुनः सिंचाई के बाद एकरूप वानस्पतिक वृद्धि एवं पुष्पन होता है।
- ❖ प्रकाश संश्लेषित पदार्थों का उपयोग फल विकास की ओर अधिक होता है।

लाभ

- ❖ मृग बहार के लिए प्रभावी फसल नियमन।
- ❖ पुष्पन में एकरूपता।

- ❖ फलों के आकार, मिठास एवं कुल घुलनशील ठोस पदार्थ में वृद्धि।
- ❖ वर्षाकालीन फसल में होने वाले कीट एवं रोगों का कम प्रकोप।
- ❖ शीतकालीन अमरुद की बेहतर गुणवत्ता एवं अधिक आर्थिक लाभ।

सावधानियाँ

- ❖ इन तकनीकों का प्रयोग केवल स्वस्थ एवं फलधारी वृक्षों में ही करना चाहिए।
- ❖ अत्यधिक जड़ छंटाई या लंबे समय तक जल तनाव देने से वृक्ष कमजोर हो सकते हैं।
- ❖ जड़ छंटाई करते समय मुख्य सहायक जड़ों को क्षति नहीं पहुँचनी चाहिए।
- ❖ अत्यधिक गर्म मौसम में जल तनाव की अवधि का सावधानीपूर्वक प्रबंधन आवश्यक है।

अमरुद में रसायनों द्वारा फसल नियमन

अमरुद में लाभकारी मृग बहार (शीतकालीन फसल) प्राप्त करने हेतु रासायनिक फसल नियमन एक प्रभावी तकनीक है। इस विधि में पादप वृद्धि नियामकों तथा पर्णपात प्रेरकों का उपयोग करके अवांछित पुष्पन को नियंत्रित किया जाता है, पत्तियों के झड़ने को प्रेरित किया जाता है, नई वानस्पतिक वृद्धि को प्रोत्साहित किया जाता है तथा वांछित मौसम में एकरूप पुष्पन प्राप्त किया जाता है। रासायनिक विधियाँ हाथ से पुष्प हटाने की तुलना में कम श्रमसाध्य होती हैं तथा व्यावसायिक बागों के लिए अधिक उपयुक्त हैं।



सावधानियाँ

- ❖ रासायनिक फसल नियमन केवल स्वस्थ एवं स्थापित फलधारी वृक्षों में ही किया जाना चाहिए।
- ❖ अनुशंसित सांद्रता का कड़ाई से पालन करना चाहिए, क्योंकि अधिक मात्रा से अत्यधिक पर्णपात, वृक्ष की वृद्धि में कमी तथा उपज हानि हो सकती है।
- ❖ रसायनों का छिड़काव प्रातःकाल अथवा सायंकाल के ठंडे समय में करना चाहिए, जिससे पादप विषाक्तता से बचा जा सके।
- ❖ समान प्रभाव प्राप्त करने के लिए वृक्ष की सम्पूर्ण छत्र पर एकसमान छिड़काव आवश्यक है।
- ❖ रसायनों के प्रयोग के दौरान दस्ताने, मास्क एवं सुरक्षात्मक वस्त्रों का उपयोग करना चाहिए।
- ❖ अत्यधिक सूखे अथवा तीव्र गर्मी की स्थिति में रासायनिक उपचार नहीं करना चाहिए।
- ❖ पादप वृद्धि नियामकों एवं अन्य रसायनों के प्रयोग हेतु राज्य कृषि विश्वविद्यालयों तथा संबंधित नियामक संस्थाओं की नवीनतम अनुशंसाओं का पालन करना चाहिए।

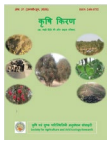
रासायनिक फसल नियमन के लाभ

- ❖ मृग बहार के लिए प्रभावी फसल नियमन सुनिश्चित करता है।

- ❖ उच्च टीएसएस, बेहतर स्वाद तथा अधिक बाजार मूल्य वाले शीतकालीन फलों का उत्पादन करता है।
- ❖ वर्षाकालीन फलों में होने वाले कीट एवं रोगों के प्रकोप को कम करता है।
- ❖ पुष्पन एवं फलन में एकरूपता लाता है।
- ❖ हाथ से पुष्प हटाने की अपेक्षा श्रम एवं लागत में कमी करता है।
- ❖ बेहतर फसल प्रबंधन के माध्यम से बाग की लाभप्रदता बढ़ाता है।

पोषण प्रबंधन का महत्व

अमरूद में संतुलित पोषण प्रबंधन फसल नियमन का एक महत्वपूर्ण घटक है, क्योंकि यह वानस्पतिक वृद्धि, पुष्प कलिका विभेदन, फल सेट, फल विकास तथा फलों की गुणवत्ता को प्रभावित करता है। शाखा छंटाई, जड़ छंटाई अथवा नमी तनाव जैसी फसल नियमन तकनीकों द्वारा वृक्षों पर नियंत्रित तनाव उत्पन्न करने के पश्चात् खाद एवं उर्वरकों का समयानुसार प्रयोग वृक्षों की स्फूर्ति को पुनः स्थापित करने, नई वानस्पतिक वृद्धि को प्रोत्साहित करने तथा वांछित बहार, विशेषकर मृग बहार, में समकालिक एवं एकरूप पुष्पन सुनिश्चित करने में सहायक होता है। अतः अमरूद में सफल फसल नियमन, बेहतर फल गुणवत्ता तथा अधिक उत्पादन प्राप्त करने के लिए संतुलित एवं समयबद्ध पोषण प्रबंधन अत्यंत आवश्यक है। मृग बहार फसल नियमन के अंतर्गत पूर्ण विकसित फलधारी अमरूद के वृक्षों में प्रति वृक्ष 30-40 किग्रा अच्छी सड़ी



हुई गोबर की खाद, 300-400 ग्राम नाइट्रोजन, 250-350 ग्राम फॉस्फोरस तथा 250-350 ग्राम पोटाश का प्रयोग किया जाना चाहिए। मई-जून में शाखा छंटाई के पश्चात् फसल नियमन क्रियाओं के साथ एफ.वाई.एम. की पूरी मात्रा, फॉस्फोरस एवं पोटाश की पूर्ण मात्रा तथा नाइट्रोजन की आधी मात्रा का प्रयोग करें, जबकि फल सेट होने के 4-6 सप्ताह बाद नाइट्रोजन की शेष आधी मात्रा का प्रयोग करें। सूक्ष्म पोषक तत्वों के प्रबंधन हेतु 0.5 प्रतिशत जिंक सल्फेट 0.25 प्रतिशत बुझा हुआ चूना तथा 0.1-0.2 प्रतिशत बोरिक अम्ल का पर्णोप छिड़काव मई-जून में पुष्पन पूर्व अवस्था में 15 दिन के अंतराल पर दो बार करना चाहिए। इससे पुष्पन, फल सेट में सुधार होता है तथा फल झड़ने की समस्या कम होती है। जिंक की कमी वाले बागों में 100-200 ग्राम जिंक सल्फेट प्रति वृक्ष प्रति वर्ष जैविक खाद के साथ मिट्टी में भी दिया जा सकता है। पोषक

तत्वों का संतुलित एवं समयानुकूल प्रयोग तनाव उपचारों के बाद वृक्षों की शीघ्र पुनर्बहाली, एकरूप पुष्पन, बेहतर फल गुणवत्ता तथा मृग बहार फसल की अधिक उत्पादकता सुनिश्चित करता है।

किसानों के लिए बहार प्रबंधन के लाभ

किसानों के दृष्टिकोण से देखा जाए तो बहार प्रबंधन एक लाभकारी तकनीक है, जिससे वे कम लागत में अधिक उत्पादन और बेहतर गुणवत्ता प्राप्त कर सकते हैं। विशेष रूप से सर्दियों की फसल पर ध्यान केंद्रित करने से बाजार में अच्छे दाम मिलते हैं और कीट-रोगों की समस्या भी कम होती है। इस प्रकार, यदि किसान वैज्ञानिक तरीकों से बहार प्रबंधन अपनाते हैं, तो वे अपनी आय में उल्लेखनीय वृद्धि कर सकते हैं और अमरुद की खेती को अधिक लाभकारी बना सकते हैं।